एकादशी महात्म्य

श्रील वेदव्यास विरचित पुराणोंसे संग्रहित

संग्रहक-गोविन्द भक्त दास

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

परं विजयते श्रीकृष्ण संकीर्तनम्।

वैष्णव सेवा केंद्र
१८७, शुक्रवार पेठ, तिलकवाडी,
बेलगांव - ५९० ००६ (कर्नाटक)
संपर्क : ९२४२१७६५८७
E-mail : vishnulok.rns@gmail.com
प्रकाशक : विष्णुलोक दास

मुद्रक :

विषय सूची

उपवास की आवश्यकता

हमारे देश में सामान्यतः सब लोग उपवास करते हैं । सप्ताह के कौनसे तो दिन उपवास का व्रत रखते है और उस के द्वारा विविध देवताओंको प्रसन्न करने की इच्छा होती है । इस व्रत के पीछे कोई तो उद्देश्य निश्चित ही होता है । साधारणतः धन प्राप्ति के हेतु, बीमारी से ठीक होने के लिए, राजनीति में पद के लिए, अच्छी नौकरी, पत्नी या पति प्राप्ति के लिए लोग उपवास करते है ।

भौतिक इच्छा प्राप्ति के लिए उपवास करने से बहुत बार फल मिलता है । पर यह फल भौतिक होने से सिर्फ क्षणिक होता है । ऐसे व्रत करना मतलब भगवानसे किया हुआ सौदा ही है । हमारी इच्छा पूरी होते ही व्रत समाप्त करके हम भूल जाते है । 'जरूरत खत्म होते ही वैद्य की गुंजाईश नही रहती !' श्रील प्रभुपाद ऐसे अनुष्ठानोंको 'भौतिक धर्म' कहते थे ।

भगवान् श्रीकृष्ण के भक्त भी एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी, गौर पौर्णिमा, नरसिंह जयंती, व्यासपूजा या और अन्य वैष्णव तिथिकों उपवास करते है, व्रत रखते है। इसके पीछे उनका क्या उद्देश्य होता है ? वस्तुतः भक्तोंकी कोई भी भौतिक कामना नही होती । भक्त अपने आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह व्रत करते है । व्रत का पालन करना यह मूल सिद्धांत न होकर, भगवान् के प्रति अपनी श्रद्धा बढाना यह कारण है । उपवास करनेसे मन शुद्ध होता है, मन को वश में करके भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपनी श्रद्धा बढाना यह कारण है । मन को वश में करके भगवान श्रीकृष्ण की सेवा उत्तम प्रकारसे करने के लिए उपवास सहायक होता है ।

एकादशी के दिन अन्न का त्याग करके, शरीरकी आवश्यकताएँ कम करके श्रवण–कीर्तन के द्वारा भगवान् की अधिक से अधिक सेवा करना यही उपवास का उद्देश्य है । इससे भगवान संतुष्ट होते है । भारत में अनादि कालसे एकादशी के व्रत का पालन किया जाता है । लेकिन अभी लोगोंको अध्यात्म के प्रति कोई रूचि नही है । अगर कोई एकादशी व्रत रखना चाहता है तो घरके लोग नाराज होते है । एकादशी व्रत का पालन बडे–बुजुर्ग लोगोंको करना है, जवानोंको तो खा–पीकर मौज करनी चाहिए। ऐसा उपदेश दिया जाता है।

श्रील प्रभुपाद एकादशी तथा अन्य उत्सवों के वक्त व्रत रखनेको आध्यात्मिक जीवनका महत्त्वपूर्ण अंग मानते है। वे कहते है, ''यह सभी विधि–विधान हमारे महान आचार्योनें उन लोगों के लिए बनाए है जो दिव्य जगत् में भगवान्का संग पाने के इच्छुक है। महात्मागण इन सभी विधि–विधानों को मानते है, इसलिए उन्हें फल मिलता है।''

–प्रकाशक

प्रस्तावना

बहुत सारे भक्तोंके आग्रहपर यह पुस्तक लिखने का प्रयास किया है । श्रील व्यासदेवजीने पुराणोंमें एकादशीव्रत का माहात्म्य अनेक स्थानोंपर किया है । इस पुस्तक में हर एकादशी माहात्म्य का वर्णन कथारूप में किया गया है । कथा पढनेके बाद किसीको ऐसा प्रतीत हो कि इस पालन से भौतिक लाभ होता है, इसलिए यह व्रत केवल भौतिक लाभहेतु हो । किंतु वेसा नही है, जो वैष्णव है, उनके लिए यह सर्वश्रेष्ठ व्रत है । एकादशी भगवान् श्रीकृष्ण को अत्यंत प्रिय है, इसलिए उसको *हरिवासर* कहते है।

उपवास इस शब्द अर्थ है पास रहना । हमें अगर भगवान के निकट रहना है, तो उपवास करना आवश्यक है । इसीलिए एकादशी के दिन सभी भौतिक इंद्रियतृप्ती के कार्य से दूर रहकर भगवान के नामस्मरण में अधिक–से–अधिक समय बिताना चाहिए । ब्रह्मवैर्वत पुराणमें कहा गया है कि–

उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासो गुणैः सह ।
उपवासः स विज्ञेयः सर्व भोग विवर्जितः ।।

उपवास का मतलब सभी पापोंसे और इंद्रियतृप्ति के कार्योसे दूर रहना। निश्चित ही एकादशी व्रत के पालन से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनकी प्राप्ति तो होती है, पर उसके साथ पंचम पुरूषार्थ भगवद्भक्ति अथवा कृष्णप्रेम भी प्राप्त होता है ।

श्री हरिभक्ती विलास नामक ग्रंथमें बताया गया है कि,

एकादशी व्रतं नाम सर्व काम फल प्रदम ।
कर्तव्यं सर्वदा विप्रैः विष्णु प्रीणनकारणम् ।।

भगवान् श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्राह्मणोंको एकादशी व्रतका पालन करना चाहिए । यह उनका कर्तव्य है । इसीलिए हर एक व्यक्तिको भगवान् की प्रसन्नता के लिए इस व्रतका पालन करना चाहिए। भगवान श्रीविष्णु प्रसन्न होनेसे सुख और समृद्धि अपने आप प्राप्त होती है ।

ॐ विष्णुपाद नित्यलीला प्रविष्ट सच्चिदानंद भक्तिविनोद ठाकुर अपने एक गीत में लिखते है,**माधव तिथी भक्ति जननी जनते पालन करी ।**

माधव तिथी अर्थात एकादशी, जन्माष्टमी इ. व्रत, भक्तिजननी का मतलब हमारे हृदयमें भक्ति निर्माण करनेवाली है। इसलिए वे कहते है कि, हमे प्रयत्नपूर्वक उसका पालन करना चाहिए ।

संत शिरोमणी श्री तुकाराम महाराज कहते है,

ज्यासी नावडे एकादशी । तो जिताची नरकवासी

ज्यासी नावडे हे व्रत । त्यासी नरक तोहि भीत
ज्यासी घडे एकादशी । जाणे लागे विष्णुपाशी
तुका म्हणे पुण्यराशी । तोचि करी एकादशी

जिसे यह एकादशी अच्छी नही लगती, वो जीते जी नरक में रहनेवाला व्यक्ति है । जिसे यह व्रत पसंद नही उससे नरक भी डरते है । क्योंकि वह व्यक्ति महापापी माना जाता है । जो एकादशी व्रतका पालन करता है, उसे निश्चित वैकुंठ प्राप्ती होती है । इसीलिए तुकाराम महाराज कहते है जिसने पूर्वजन्मोंमें पुण्यों की राशियाँ इकठ्ठी की है, वे ही केवल एकादशी व्रतका पालन करते है ।

एकादशी को अन्नग्रहण करनेसे क्या होता है इसका वर्णन तुकाराम महाराज इस प्रकार करते है,

एकादशीस अन्नपान । जे नर करिती भोजन
श्वान विष्ठेसमान । अधम जन ते एक
तया देही यमदूत । जाले तयाचे अंकित
तुका म्हणे व्रत । एकादशी चुकलिया

जो लोग एकादशी को अन्नग्रहण करते है, भोजन करते है वह बहुत ही पतित जीव है । उन्हें अधम माना जाता है, क्योंकि वे जो भोजन करते है वह श्वान की विष्ठा जैसा होता है । जो यह व्रत नही करता, उसके लिए यमदूत हैं ही, वो नरकगामी बनता है ।

एकादशी के दिन पापपुरूष अन्नमें वास करता है, इसलिए अन्नग्रहण नही करना चाहिए । जिसे अपना हित करना हो उसे निम्नलिखित अन्न का एकादशी के दिन त्याग करना चाहिए ।

१) चावल, तथा उससे बने पदार्थ, २) गेहुँ, ज्वार, मक्का इनसे बने हुए पदार्थ, ३) दाल-मूंग, मसूर, तूर, चना, मटर इत्यादि, ४) जव, ५) राई और तिलका तेल.

भूलसे भी इन पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए ।अन्यथा व्रत भंग होता है।

भक्ति में प्रगति करने के इच्छुक व्यक्ति को इनका पालन करना चाहिए । एकही दिन दो तिथि आती हो तो वैष्णव उस दिनका व्रत अथवा उत्सव दूसरे दिन करते है। इसलिए हम स्मार्त और भागवत यह दो एकादशी देखते हैं । हरिभक्ती विलास इस ग्रंथमें कहा गया है, *हे ब्राह्मण, सूर्योदय से पूर्व ९६ मिनट के पहिले एकादशी शुरू होती है उस एकादशी को शुद्ध एकादशी कहना चाहिए । गृहस्थोंको इस एकादशी का पालन करना चाहिए ।*

एकादशी करनेवाले या करने की इच्छा होनेवाले हर एक व्यक्तिको इस ग्रंथ को ध्यानपूर्वक पढना चाहिए ।

संग्राहक

१. उत्पन्ना एकादशी

उत्पन्ना एकादशी का महात्म्य भविष्योत्तर पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण अपने सखा अर्जुन को बताते है ।

नैमिष्यारण्यमें एकत्रित हुए सभी ऋषियोंको सूत गोस्वामी बताते हैं, ''भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको बताये अनुसार जो नियमपूर्वक एकादशीव्रत करता है, उसे इस जन्ममें आनंद और अगले जन्ममें वैकुंठ लोक की प्राप्ति होती है ।''

एक बार अर्जुनने भगवान् श्रीकृष्ण से पूछा, ''हे जनार्दन ! एकादशी के दिन पूरा उपवास करने से या केवल रात को खाने से या केवल दोपहर में प्रसाद लेनेसे क्या लाभ मिलता है ?''

तब भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे अर्जुन ! हेमंत ऋतु के प्रारंभ के मार्गशीर्ष महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी करनी चाहिए । प्रातःकाल उठकर इस का प्रारंभ करे । दोपहर में स्नान करके शुद्ध होना चाहिए । स्नान करते हुए पृथ्वीमाता की इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए ।

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
मृत्तिका हर मे पापं यन्मया पूर्वसंचितम् ।।

''है अश्वक्रान्ते ! हे रथक्रान्ते ! हे विष्णुक्रान्ते ! हे वसुंधरे ! हे मृत्तिके ! हे पृथ्वीमाता ! पूर्वजन्मों के मेरे सभी पापोंको नष्ट कर दो, जिससे मैं उच्चध्येय (भगवत्धाम) की प्राप्ति कर सकूं ।''

उसके बाद भगवान श्रीगोविंद की पूजा करनी चाहिए ।

एक बार देवराज इंद्र सब देवताओं के साथ श्रीविष्णु के पास गये और इस तरह प्रार्थना करने लगे, ''हे जगन्नाथ ! हे पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान्! हमारा प्रणाम स्वीकार करें । आप सबके आश्रय है। आपही सबके माता-पिता है । आप सभीका सृजन, पालन, विनाश करनेवाले है। आप धरती, आकाश समेत सभी ब्रह्मांडों का हित करनेवाले है। आप ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं । यज्ञ, तपस्या और वैदिक मंत्रोके स्वामी तथा भोक्ता आप है । इस जगत में ऐसी कोई भी (चराचर) वस्तु नहीं जिसपर आपका नियंत्रण न हो । संपूर्ण जग्त के चर-अचर वस्तु के स्वामी तथा नियंत्रक आप ही है । हे पूर्ण पुरूषोत्तम! हे देवेश्वर! हे शरणागत वत्सल ! हे योगेश्वर ! दानवोंने सभी देवताओंको स्वर्गसे भगा दिया है और भय से उन्होंने आपके चरणोंकी शरण ली है । कृपया उनकी रक्षा करें । हे जगन्नाथ ! स्वर्ग से इस भूलोकपर पतन होकर हम इस दुःखसागर में डूब रहे है । कृपया हम पर आप

प्रसन्न होईये ।''

इस प्रकार इंद्रकी दया की प्रार्थना सुननेपर भगवान् श्रीविष्णुने पूछा, ''ऐसा कौनसा अविजयी दानव है, जिससे देवता पराजित हो रहे है? उसका नाम क्या है ? उसके शक्तिका स्रोत क्या है ? हे इंद्र, निर्भय होकर सभी जानकारी हमें कहो ।''

इंद्र ने कहा, ''हे देवेश्वर ! हे भक्तवत्सल ! हे पुरूषोत्तम ! देवताओं में भय और चिंता निर्माण करनेवाला असुर नंदीजंघ ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न हुआ है । उसके जैसा ही उसे बलशाली और कुप्रसिद्ध मूर नामका बेटा है । चंद्रावती नाम का भव्य नगर मुर राक्षसकी राजधानी है ! इसी मुर राक्षसने सब देवताओंको स्वर्गसे निकालकर स्वयं वहाँ निवास कर रहा है । इंद्र, अग्नि, चंद्र, वरूण, यम, वायु और ईश ये सभी देवताओंके अधिकार उसने छीन लिए है । हम सब देवता मिलकर भी उसे पराजित नहीं कर सके। हे विष्णु ! आप कृपया उसका अंत करके देवताओं की रक्षा कीजिए ।''

इंद्र के यह शब्द सुनते ही देवताओंको कष्ट देनेवाले मुर राक्षस के प्रति श्रीविष्णुको क्रोध आया और वे कहने लगे, ''हे देवराज ! मैं स्वयं उस शाक्तिशाली दानव का वध करूँगा । आप सब चंद्रावती नगर चलिए।'' सब देवता भगवान के कहे अनुसार चंद्रावती नगरी में जाकर अनेक प्रकार के शस्त्र जमा करने लगे ।

दानवोंके सामर्थ्य से पहलेही सभी देवता भयभीत थे । पर अब भगवान श्रीविष्णु के नेतृत्व में निर्भय होकर देवता रणभूमि में पहुँचे । उन्हें देखकर राक्षस क्रोधित हो गये । भगवान्ने सभी असुरोंको पराजित किया, परंतु मुर को पराजित करना कठिन लगने

लगा। अनेक अस्त्र-शस्त्र का उपयोग करनेपर भी भगवान् मुर राक्षस को मार नहीं सके। दस हजार वर्ष तक दोनोंमें बाहुयुद्ध चला, अंतमें मुर राक्षसको पराजित करके भगवान बद्रिकाश्रममें हेमवती नामक गुफामें विश्राम करने पधारे ।

भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे, ''हे अर्जुन ! उस असुरने गुफातक पीछा करके उसमें प्रवेश किया और श्रीविष्णु को निद्रावस्था में मारने का विचार किया। उस समय उनके शरीरसे एक तेजस्वी कन्या बाहर निकली।

वह शस्त्रोंसे परिपूर्ण थी, उसने मुर राक्षसे बहुत समयतक युद्ध करके उसका वध किया । शेष दानव भयभीत होकर पाताल लोकमें गये । श्रीविष्णु ने निद्रासे जागकर मूर राक्षस का शव और उनके सामने हाथ जोडके खडी हुई कन्या देखी तो आश्चर्यसे पूछने लगे, ''तुम कौन हो ?''

उस देवीने उत्तर दिया, ''हे भगवान ! मैं आपके शरीरसे उत्पन्न हुई हूँ और इस असुरका मैने वध किया है ! आपको निद्रावस्था में देखकर मारने के लिए आनेवाले इस असुर का मुझे वध करना पडा !''

भगवान श्रीविष्णुने कहा, ''हे देवी ! आपके इस कार्य से मैं प्रसन्न हूँ । तुम मनचाहा वरदान माँग लो ।'' जब देवीने वरदान मांगा तब भगवान् श्रीविष्णु ने कहा, ''तुम मेरी आध्यात्मिक शक्ती हो, एकादशी दिन उत्पन्न होने के कारण तुम्हारा नाम एकादशी होगा । जो भी एकादशी व्रत करेगा उसे अक्षय सुख की प्राप्ति होगी ।''

''उस दिन से एकादशी दिन विश्वमें पवित्र दिन जाना जाता है । हे अर्जुन ! जो इसका पालन करेगा उसे मैं परम (उच्च) गति प्रदान करता हूँ ! हे अर्जुन ! एकादशी और द्वादशी एक ही तिथि में होनेपर उस एकादशीको सर्वोच्च माना गया है । एकादशी दिन मैथुन, अन्न, मद्य, मांस, रसोई में कास्य के बर्तन, शरीरको तेल लगाना वर्जित है । जो इसका महात्म्य जानकर व्रत करेगा उसे अधिक फलप्राप्ति होगी ।''

ଓ ଓ ଓ

२. मोक्षदा एकादशी

ब्रह्मांड पुराणमें मार्गशीर्ष महीने के शुक्ल पक्ष में आनेवाली मोक्षदा एकादशी का महात्म्य भगवान श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से कहते है !

युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे देवदेवेश्वर ! मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्षमें आनेवाली एकादशी का क्या नाम है? उसे किसप्रकार करना चाहिए, किस देवताको पूजना चाहिए ? कृपया इस विषयपर विस्तार से कहें !''

भगवान श्रीकृष्णने कहा, ''मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी मोक्षदा कहलाती है । इसकी महिमा सुननेसे वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होता है ! यह एकादशी पापहरण करती है ! हे राजन् ! इस दिन तुलसी मंजरी और धूप-दीप के साथ भगवान दामोदर की पूजा करनी चाहिए ! बडे बडे पातकों को नष्ट करनेवाली मोक्षदा एकादशी की रात्रि में मेरी प्रसन्नता के लिए नृत्य, कीर्तन तथा कथा करके जागरण करना चाहिए ! जिनके पूर्वज नरकमें है, वे इस एकादशीके पूण्य को पूर्वजोंको दान करनेसे उनको मोक्ष की प्राप्ति होती है !''

प्राचीन काल में वैष्णव निवासीत रमणीय चम्पक नगरमें वैखानस महाराज राज्य करते थे ! वे अपनी प्रजाका संतान की भाँति पालन करते थे ! एक रातको उन्होंने स्वप्न में देखा कि उनके पितर नीच नरक योनि में है ! अपने पितरोंकी इस अवस्था से आश्चर्यचकित होकर अगले प्रातःकाल में ब्राह्मणोंको बुलाकर उस स्वप्न के बारे में कहा !

महाराज ने कहा, ''हे ब्राह्मणो ! मैने अपने पितरोंको नरक में देखा है ! बारबार
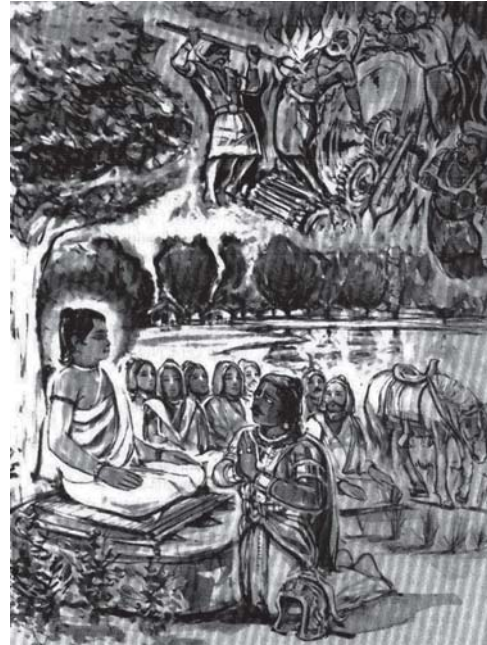
रूदन-क्रंदन करते हुए मुझे कह रहे थे तुम हमारे तनुज हो, तुम ही हमें इस स्थिति से निकाल सकते हो ! हे द्विजवर ! मैं उनकी इस अवस्थासे अत्यंत विचलित हूँ ! क्या करना चाहिए ? कहाँ जाना चाहिए ? कुछ समझ में नही आता ! हे द्विजश्रेष्ठ ! कौनसा व्रत, तप या योग करनेसे मेरे पूर्वजोंका नरकसे उद्धार होगा, कृपया मुझसे कहिए! मेरे जैसा बलवान और साहसी पुत्र होते हुए भी मेरे माता-पिता नरक में हो, तो मेरा जीवन व्यर्थ है ?''

ब्राह्मण कहने लगे, ''राजन् ! निकट ही पर्वतमुनिंका आश्रम है, उन्हे भूत-भविष्य ज्ञात है ! हे नृपश्रेष्ठ ! आप उनके पास जाईये !''

ब्राह्मणोंकी बात सुनकर तत्काल राजा पर्वतमुनिकें आश्रम में गये और मुनिंको दंडवत करके उनके चरणस्पर्श किए ! मुनिने भी राजा का कुशलक्षेम पुछा!

महाराज कहने लगे, ''स्वामिन् ! आपकी कृपासे राज्य में सब कुशल है ! किंतु मैंने स्वप्न में देखा कि मेरे पूर्वज नरकमें है ! कौनसे पुण्यसे उनको मुक्ति मिलेगी कृपया आप कहिए !''

राजाके वचन सुनकर मुनि कुछ काल ध्यानस्थ हुए और राजा से कहा, ''महाराज! मार्गशीर्ष महीने के शुक्ल पक्ष को मोक्षदा एकादशी आती है ! उस व्रतका आप सभी पालन करके उसका पुण्य पूर्वजोंको दान कीजिए ! उस पुण्य के प्रभावसे उनकी नरकसे मुक्ति होगी!''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे युधिष्ठिर ! मुनि के वचन सुनते ही राजा ने घर लौटकर एकादशी व्रत को धारण करके उसका पुण्य अपने पितरोंको दान किया! उस पुण्य के दान करतेही आकाशसे पुष्पवृष्टि हुई! वैखानस महाराजाके पिता-पूर्वज नरकसे बाहर निकल के आकाशमें आए और राजा को कहा, ''पुत्र ! तुम्हारा कल्याण हो !'' इस आशीर्वाद को देकर वे सब स्वर्ग में गए !

इस प्रकार जो कोई चिंतामणीसमान इस एकादशी का व्रत करेगा उसे मृत्यु के बाद मोक्ष मिलेगा ! जो इस महात्म्य को सुनेगा, पढेगा उसे वाजपेय यज्ञ के फल की प्राप्ति होगी !

ॡ ॡ ॡ

३. सफला एकादशी

ब्रह्मांड पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवाद में सफला एकादशी का महात्म्य बताया गया है ! युधिष्ठिर महाराज ने पूछा, ''हे स्वामिन् ! पौष महीनेके कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम क्या है ? यह व्रत किस प्रकार करते हैं ? किस देवताकी पूजा करते है ? इस के बारें में आप विस्तारसे कहिए ?''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''राजेन्द्र ! बहुत बडे-बडे यज्ञ करने से जो आनंद प्राप्त होता है उससे अधिक आनंद इस व्रत पालन करनेवालेसे मुझे होता है ! यथाशक्ति विधिपूर्वक हर एक व्यक्ति को यह व्रत करना चाहिए ! भगवान् नारायणकी पूजा करें ! जिस तरह सर्पों में शेषनाग, पक्षियोंमें गरूड, देवताओंमें श्रीविष्णु और मानवोंमे ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सब व्रतोंमें एकादशी तिथि श्रेष्ठ है ! हे राजन ! सफला एकादशी के दिन नाममंत्र का उच्चारण करते हुए नारियल, सुपारी, आम, नींबू, अनार, आवला, लवंग, बेर आदि फलोंको अर्पण करके श्रीहलिकी पूजा करनी चाहिए! धूप-दीपसे भगवानकी अर्चना करनी चाहिए! सफला एकादशीको विशेष करके दीपदान करनेका भी विधान है! रात को वैष्णवोंके साथ भगवत्-कथा, कीर्तन करते हुए जागरण करे! हजारों वर्षों की तपस्या से भी इस रात्रि के जागरण के फल की तुलना नही की जा सकती!''

''हे नृपश्रेष्ठ! अब इस सफला एकादशी की शुभदायी कथा सुनो! प्राचीन काल में चम्पावती नामक सुंदर नगरी महाराज माहिष्मताकी राजधानी थी ! उन्हें पांच पुत्र थे ! ज्येष्ठ पुत्र हमेशा पापकर्म करते हुए परस्त्री संग और वेश्यासक्त था ! अपने पिता का धन पापकर्मो में नष्ट किया !

वह दुराचारी ब्राह्मण, वैष्णव, देवताओंकी निंदा करता था ! उसके इन पापकर्मोंको देखकर राजाने उसका नाम लुम्भक रखा ! कुछ दिनों पश्चात पिता और दूसरे भाईयोंने उसे राज्यसे निकाल दिया ! लुभ्भक गहन वन में चला गया ! वन में रहते हुए लुभ्भक यात्रियोंको लूटने लगा ! एक दिन नगर में चोरी करने लुम्भक गया, तो सिपाहियोंने उसे पकड लिया ! अपने पिता का नाम कहने पर सिपाहियोंने उसे छोड दिया! वह वापस वन में गया और मांस, फलहार पर जीवन-निर्वाह करने लगा ! वह दुष्ट प्राचीन बरगद पेड के नीचे विश्राम करता था ! वह पेड अत्यंत प्राचीन होते हुए उस वनमें उस वृक्ष को महान देवता माना जाता था ।''

बहुत दिनों पश्चात संचित पुण्यप्रभावसे उसने एकदिन अनजाने एकादशी व्रत का पालन किया ! पौष महीने की कृष्ण पक्ष की दशमी को लुम्भक वृक्ष के फल खाकर और वस्त्रहीन रहनेसे रातभर ठंडीमें सो नही सका ! लगभग वह बेहोश हो चुका था ! 'सफला' एकादशी दिन भी वह बेहोश ही रहा । दोपहर में उसे होश आया । उठकर अथक प्रयास से चलते हुए,भुख से व्याकुल वह गहन वन में गया। जब फलोंको साथ वह लौटा तब सूर्यास्त हो रहा था । इसलिए उस फलोंको वृक्ष के मूलमें रखा और प्रार्थना की, कि भगवान् लक्ष्मीपति विष्णु इन फलोंका स्वीकार करें । ऐसा कहकर लुम्भक उस रात भी नही सोया । इससे अनजाने में उसने व्रतपालन किया ।

उस समय आकाशवाणी हुई, ''हे राजकुमार ! 'सफला' एकादशी के फल के प्रसाद से तुम्हे राज्य और पुत्र प्राप्ति होगी ।'' तब उसका मन परिवर्तन हुआ । उस समय से उसने अपनी बुद्धि भगवान् विष्णुके भजनमें लगायी । उसके बाद वह अपने पिताश्री के पास लौट गया, पिताने उसे राज्य दिया, अनूरूप राजकन्या के साथ विवाह करके बहुत वर्षों तक उत्तम राज्य करता रहा । भगवान विष्णुके वरदानसे उसे 'मनोज' नामक पुत्र की प्राप्ति हुई । मनोज जब राज्य संभालने योग्य हुआ तब लुम्भक ने आसक्तिरहित होकर राज्य त्याग दिया और भगवान् श्रीकृष्ण के शरणागत हो गया । इस प्रकार से सफला एकादशी के व्रत प्रभाव से इस जन्म में उसे सुख प्राप्त हुआ साथ ही मृत्यु पश्चात मोक्ष की भी प्राप्ति हुई। सफला एकादशी के पालन से तथा महिमा सुनने मनुष्य को राजसूय यज्ञ की प्राप्ति होती है।

४. पुत्रदा एकादशी

भविष्योत्तर पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण तथा महाराज युधिष्ठिर के संवाद में पुत्रदा एकादशी के महात्म्य का वर्णन मिलता है ।

महाराज युधिष्ठिर ने पुछा, ''हे श्रीकृष्ण ! कृपा करके मुझे पौष मास की शुक्ल पक्षकी एकादशी का वर्णन करे । उस व्रत की विधि क्या है ? तथा कौनसे देवताकी पूजा की जाती है ?''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''जगत कल्याण के लिए इस एकादशी का मैं वर्णन करूँगा । अन्य एकादशी की तरह इस एकादशी को व्रत करे । इसे 'पुत्रदा' कहते है । सब पापों का हरण करनेवाली यह सर्वोत्तम तिथि है । कामना तथा सिद्धी को पूर्ण करनेवाले भगवान् इस तिथिके अधिदेवता है । पूरे त्रिलोकमें यह सबसे उत्तम तिथि है ।''

''एक दिन घोडेपर सवार होकर महाराज सुकेतुमान गहरे वन में चले गये । पुरोहित और दूसरे लोगोंको इसकी कल्पना नही थी । पशु-पक्षियोंसे भरे हुए इस गहरे वन में महाराज भ्रमण कर रहे थे । दोपहर होते ही, महाराज को भूख और प्यास लगी । जल की तलाश में महाराज इधर-उधर घूम रहे थे । पूर्वजन्मके पुण्यसे उन्हे एक जलाशय दिखाई दिया । उस जलाशय के पास ही एक मुनिका आश्रम था ! अनेक शुभ शकुन होने लगे, उनकी बाँयी आँख और बायाँ हात फडकने लगा । शुभ घटना की आशा में राजा आश्रम में गये । उन्हें देखकर राजा को बहुत प्रसन्नता हुई । घोडे से उतरकर राजाने सभी मुनियोंको प्रणाम किया, तब उन मुनियोंने कहा, ''हे राजन ! हम आपपर प्रसन्न है ।''

राजा ने कहा, ''हे मुनिगण ! आप कौन है ? आपके

नाम क्या है? आप यहाँपर किस उद्देश्यसे एकत्रित हुए है ? कृपया हमे सत्य बताईये।''

मुनि ने कहा, ''राजन ! हम विश्वदेव है । आजसे आनेवाली पाँचवी तिथिसे माघ मास प्रारंभ होगा । आज 'पुत्रदा' एकादशी है । जो कोई भी यह एकादशी करता है उसे पुत्रप्राप्ति अवश्य होती है ।''

राजा ने कहा, ''विश्वदेवगण ! अगर आप मुझपर प्रसन्न है तो मुझे कृपया पुत्रप्राप्ति हो !''

मुनिने कहा, ''राजन ! आज 'पुत्रदा' एकादशी है । आज आप इसका पालन करे, भगवान केशव के प्रसादरूप आपको पुत्रप्राप्ति होगी।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे युधिष्ठिर ! इस प्रकार मुनियोंके कहनेपर राजाने एकादशी व्रत किया । द्वादशी को व्रत संपूर्ण करके (पारण करके) मुनियोंका आशिर्वाद लेकर राजा वापस आया । उसके पश्चात् राणी गर्भवती हुई और एकादशी के पुण्य से राजाको तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति हुई । जिसने अपने उत्तम गुणोंसे अपने पिताको संतोष दिया, वह उत्तम प्रजापालक था । इसलिए, हे राजन ! 'पुत्रदा' व्रत अवश्य करना चाहिए। जो कोई भी इस व्रतका पालन करता है उसे पुत्रकी प्राप्ति होकर वह मनुष्य स्वर्गप्राप्त करता है ।''

''जो इस व्रत की महिमा पढेगा, सुनेगा या कहेगा उसे अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होगी ।''

५. षट्तिला एकादशी

भविष्योत्तर पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर महाराज के संवाद में षट्तिला एकादशी महात्म्य का वर्णन है ।

युधिष्ठिरने पूछा, ''हे जगन्नाथ ! हे श्रीकृष्ण ! हे आदिदेव ! हे जगत्पते ! माघ मास के कृष्ण पक्षमें कौनसी एकादशी आती है? उसे किस प्रकार करना चाहिए ? उसका फल क्या होता है ? हे महाप्राज्ञ ! कृपया इस विषय में आप कुछ कहिए !''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे नृपश्रेष्ठ ! माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी 'षट्तिला' नामसे विरव्यात है । सब पापोंको हरण करनेवाली एकादशी की कथा मुनिश्रेष्ठ पुलस्त ने दाल्भ्य को कही थी । वह कथा तुम भी सुनो ।''

दाल्भ्यने पूछा, ''हे मुनीवर्य ! मृत्यु लोकमें रहनेवाला हर एक जीव पापकर्म में रत है । उन्हें नरक यातना से बचाने के लिए कौनसा उपाय है, कृपया वह आप कथन करें ।''

पुलस्त्य कहने लगे, ''हे महाभाग ! आपने अच्छी बात पुछी है, तो सुनो। माघ मास में मनुष्य को स्नान करके इंद्रियोंको संयम में रखकर काम, क्रोध, अहंकार, लोभ और निंदा का त्याग करना चाहिए । देवाधीदेव! भगवान् का स्मरण करते हुए पानी से पैरो को धोकर भूमी पर गिरा हुआ गाय का गोबर इकठ्ठा करके उसमें तिल और कपास मिलाकर एकसौ आठ पिंड बनाने चाहिए । माघ मास में आर्दा मूल नक्षत्र आते ही कृष्ण पक्ष की एकादशी का व्रत धारण करे । स्नानसे पवित्र शुद्धभावसे श्रीविष्णुकी पूजा करे । अपराध क्षमा के लिए श्रीकृष्ण नाम का उच्चारण करें । रातमें होम, जागरण करे । चंदन, कर्पूर, अरभजा और भोग दिखाकर शंख, चक्र, पद्म और गदा धारण करनेवाले श्रीहरि की पूजा करें । बारंबार श्रीकृष्ण के नाम के साथ कुम्हड, नारियल और बिजौरे के फल अर्पण करके विधिपूर्वक अर्ध्य दे । दुसरी सामग्रीका अभाव हो तो सौ सुपारियोंका उपयोग करके भी पूजन और अर्घ्यदान किया जा सकता है ।

अर्घ्य मंत्र इस प्रकार है :–

कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिर्भव ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरूषोत्तम ।।
नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरूष पूर्वज ।।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते ।

सच्चिदानंद श्रीकृष्ण आप बडे दयालु हैं । हम अनाथ जीवोंके आश्रयदाता आप हो । हे पुरूषोत्तम ! हम इस संसार सागरमें डूब रहे है, कृपया हमपर प्रसन्न हो, हे विश्वभावन ! हमारा आपको वंदन है । हे कमलनयन ! आपको प्रणाम है । हे सुब्रह्मण्यम ! हे महापुरूष ! हे सभी के पूर्वज ! आपको प्रणाम है । हे जगत्पते! लक्ष्मी के साथ आप इस अर्घ्य को स्वीकार करे ।

उसके पश्चात ब्राह्मणोंकी पूजा करके, उन्हें पानीसे भरा घडा देना चाहिए । साथमें छाता, चप्पल और वस्त्र भी अर्पण करें । 'इस दानद्वारा भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न हो' यह कहते हुए दान करना चाहिए । अपनी परिस्थिती अनुसार श्रेष्ठ ब्राह्मण को काली गाय दान में देनी चाहिए । हे द्विजश्रेष्ठ ! विद्वान पुरूषने तिल से भरा हुआ पात्र दान करना चाहिए । तिल के दान से व्यक्ति हजारो वर्ष स्वर्गमें वास करता है ।

तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी ।
दिलदाता च भोक्ता च षट्‌तिला पापनाशिनी ।।

तिलसे स्नान करना, तिल का उबटन लगाना, तिल का हवन करना, तिल डाला हुआ जल पीना, तिल दान करना, तिल का भोजन में उपयोग करना, इस प्रकार छः कार्योंमें तिल का उपयोग करने से इसे 'षट्‌तिला' एकादशी माना जाता है, जो पापहारिणी है ।

एक बार षट्‌तिला एकादशी की महिमा सुनने देवर्षि नारद भगवान् श्रीकृष्ण के पास आए । भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''एक ब्राह्मण स्त्री थी। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वह भगवान् की आराधना करती थी । अनेक प्रकारकी तपस्याओंके कारण वह बहुत दुर्बल हो गई थी। उसने बहुत दान दिए, परंतु उसने ब्राह्मण और

देवताओंको अन्नदान नहीं किया था । अनेक प्रकारके व्रत और तपस्या करने से वह शुद्ध हो गयी थी, परंतु भूखे लोगोंको कभी अन्नदान नही किया था । हे ब्राह्मण ! उसकी परीक्षा लेने मैं ब्राह्मण के रूप में उस साध्वीके घर जाकर भिक्षा माँगी ।

तभी उस ब्राह्मणीने पूछा, ''हे ब्राह्मण ! सत्य कहें कि आप कहाँसे आए है ?'' मैंने सुनकर अनजान बनते हुए उसे उत्तर नहीं दिया । उसने क्रोध में भिक्षापात्र में मिट्टी डाली। उसके बाद मैं अपने धाम लौट आया । अपनी तपस्याके प्रभाव से ब्राह्मणी मेरे धाम वापस आई । उसे संपत्ती हीन, सुवर्ण हीन, धान्य हीन सिर्फ एक सुंदर महल मिला। उस महल में कुछ न पाकर वह अस्वस्थ और क्रोधित होकर मेरे पास आई पूछने लगी, ''हे जनार्दन ! सब व्रत और तपस्या करके मैने श्रीविष्णु की आराधना की, परंतु मुझे धनधान्य क्यों प्राप्त नही हुआ?''

मैने कहा, ''हे साध्वी ! तुम भौतिक विश्वसे यहाँ आई हो । अब तुम अपने घर लौट जाओ । तुम्हे देखने देवताओंकी पत्नियाँ आयेंगी, उन्हे षट्‌तिला एकादशी की महिमा पूछकर पूरा सुनने के बाद ही दरवाजा खोलना अन्यथा नही।'' यह सुनकर ब्राह्मणी घर वापस आई।

एक बार ब्राह्मणी दरवाजा बंद करके अंदर बैठी थी, तब देवपत्नीयाँ वहाँपर आकर कहने लगी, ''हे सुंदरी ! हे ब्राह्मणी ! हम तुम्हारे दर्शन करने आए है, कृपया दरवाजा खोले ।'' तब ब्राह्मणीने कहा, ''आपको मुझे देखने की इच्छा है तो कृपया षट्‌तिला एकादशी की महिमा का वर्णन करे तभी मैं दरवाजा खोलूंगी ।'' उस समय एक देवपत्नीने उसे वह महात्म्य बताया। महात्म्य सुनने के बाद ब्राह्मणीने दरवाजा खोला, देवपत्नीयाँ उसके दर्शनसे बहुत प्रसन्न हुई।

देवपत्नियों के कहेनुसार ब्राह्मणीने षट्‌तिला एकादशीका व्रत किया । जिसके प्रभावसे उसे धनधान्य, तेज, सौंदर्य प्राप्त हुआ । धनधान्य संपादन करने के लोभदृष्टिसे यह व्रत नही करना चाहिए । इस व्रतके पालन से अपने आप गरीबी – दुर्भाग्य नष्ट हो जाता है । जो कोई भी इस तिथि को तिल दान करेगा वह सब पापोंसे मुक्त हो जाएगा ।

६. जया एकादशी

भविष्योत्तर पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवाद में इस एकादशी का वर्णन आता है । युधिष्ठिर महाराजने पुछा, ''हे जनार्दन ! माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या संबोधन है ? यह व्रत कैसे करे ? किस देवता की पूजा करनी चाहिए?''

भगवान् श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, ''राजेन्द्र ! सुनो ! माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को जया एकादशी कहते है । सब पापों का हरण करके मोक्ष देनेवाली यह उत्तम तिथि है । जो कोई भी इस व्रत का पालन करेगा उसे पिशाच योनि प्राप्त नही होगी, इसलिए प्रयत्नपूर्वक इस 'जया'एकादशी का पालन करना चाहिए ।''

प्राचीन काल में स्वर्ग में देवराज इंद्र का राज था । देवगण अप्सराओंके साथ पारिजात वृक्षसे शोभित नंदनवन में विहार कर रहे थे । पचास करोड गंधर्वोंके नायक देवराज इंद्रने अपनी इच्छासे वनमें विहार करते हुए नृत्य का आयोजन किया था । गंधर्वोंमें प्रमुख पुष्पदंत, चित्रसेन और उसका पुत्र ये तीन थे।

चित्रसेनकी पत्नी का नाम 'मालिनी' था । मालिनी और चित्रसेन की कन्या 'पुष्पवन्ती' थी । पुष्पदन्त गंधर्व का पुत्र 'माल्यवान्' था । माल्यवान् पुष्पवन्ती के सौंदर्य पर मोहित हुआ था । ये दोनों भी इंद्र की प्रसन्नता के लिए नृत्य करने आए थे । यह दोनों भी अन्य अप्सराओं के साथ आनंद में गायन कर रहे थे । किंतु एक दूसरे पर अनुराग दृष्टि के कारण वे मोहित हो गये और उनका मन विचलित हो गया इससे वे शुद्ध गायन नही कर सके । कभी ताल गलत तो कभी गायन रुकता । इस बातसे क्रोधित और अपमानित होकर इंद्रने श्राप दिया, ''आप दोनो पतित हैं । मूर्ख हैं । तुम्हारा धिक्कार हो । मेरी आज्ञाभंग करने के फलस्वरूप आप पती-पत्नी

के रूप में पिशाच योनी में जन्म लेंगे ।''

इंद्र से ऐसा श्राप मिलते ही दोनो बहुत दुखी हुए । हिमालयमें जाकर पिशाच योनि को प्राप्त होकर भयंकर दुख भोगते रहे । शारीरिक पातक से प्राप्त हुई इस योनी से पीडित वे पर्वतकी गुफामें भ्रमण कर रहे थे । एक दिन पिशाच पतिने अपनी पत्नीको पूछा, ''हमने ऐसा कौनसा पाप किया है जिसके लिए हमें ये योनी मिली? नरक यातनाएँ तो दुखदायक है पर पिशाच योनीमें भी दुख बहुत भयानक है । इसलिए पूर्ण प्रयत्नसे इस पाप से छुटकारा प्राप्त करना चाहिए ।''

दोनो चिंतामें मग्न थे । किंतु भगवान् की कृपा से उन्हे माघ महीनेकी एकादशी तिथि प्राप्त हुई । 'जया' नामसे प्रसिद्ध यह तिथि सब तिथिमें उत्तम है । इस तिथिको उन्होनें अन्न ग्रहण नही किया, जलग्रहण नही किया, किसी जीव की हत्त्या भी नही की और कोई फल भी नही खाया । दुख से व्याकुल सुर्यास्त तक वे बरगद के वृक्ष के नीचे बैठे रहे । भयानक रात उनके सामने उपस्थित हुई पर उन्हे निद्रा तक नही आई । कौनसे भी प्रकार का सुख और कामसुख भी उन्होंने नही भोगा । रात्र समाप्त होकर सुर्योदय हुआ । द्वादशी का दिन निकला । उनसे 'जया' एकादशी के व्रत का पालन हुआ था, उन्होंने रातभर जागरण किया था । व्रतके प्रभाव से और भगवान विष्णुकी शक्ती के कारण दोनों इस योनिसें मुक्त होकर अपने पूर्वरूप को प्राप्त हुए ।

उनके हृदयमें फिरसे पहले का अनुराग उत्पन्न हुआ । अलंकारसे शोभित होकर विमान में विराजमान होकर स्वर्गलोक में गए । देवराज इंद्र के सामने प्रसन्नतापूर्वक जाकर उन्हें सादर प्रणाम किया । उन्हें पूर्वरूपमें देखकर इंद्रको आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा, ''किस पुण्य के प्रभाव से आप पिशाच योनीसे मुक्त हुए ? मुझसे श्राप पाकर भी आप कौनसे देवता के आश्रय से शाप मुक्त हो गए?''

माल्यवान ने कहा, ''हे स्वामी ! भगवान् वासुदेव की कृपासे तथा 'जया' एकादशी के व्रत से हम पिशाच योनिसे मुक्त हुए ।''

देवराज इंद्र ने कहा, ''अब मेरे कहेनुसार आप दोनो सुधापान कीजिए । जो लोग भगवान् वासुदेव की शरण लेते है और एकादशी का पालन करते है वह हमें भी पूजनीय है ।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन ! इसलिए एकादशी का व्रत करना चाहिए। हे नृपश्रेष्ठ ! 'जया'एकादशी ब्रह्महत्त्या के पातक से भी मुक्त करती है । जिसने 'जया' एकादशी के व्रत का पालन किया, उसने सभी प्रकार का दान तथा यज्ञोंको अनुष्ठान करने जैसा है । इस की महिमा पढने अथवा सुनने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।''

CS CS CS

७. विजया एकादशी

स्कंद पुराणमें इस एकादशी के महिमा का वर्णंन किया गया है ।

महाराज युधिष्ठिर ने पूछा, ''हे वासुदेव ! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्षमें कौनसी एकादशी आती है ? कृपया आप मुझे बताईये ।''

भगवान श्रीकृष्णने कहा, ''हे युधिष्ठिर ! एक बार कमलपर विराजमान ब्रह्माजी को नारदजीने पूछा, ''हे सुरश्रेष्ठ ! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष में 'विजया' एकादशी आती है । उसका पालन करने से कौनसा पुण्य प्राप्त होता है इसके बारे में आप मुझे बताइये ।''

ब्रह्मदेव ने कहा, ''हे नारद ! सुनो, मैं तुम्हे एक कथा सुनाता हुँ, जो सब पापोंका हरण करनेवाली है । यह व्रत बहुत प्राचीन और पवित्र है। यह 'विजया'एकादशी राजाओंको विजय प्रदान करनेवाली है । बहुत पहले जब राजा रामचंद्र १४ वर्षों के लिए वन में गए थे, तो पंचवटी में सीता और लक्ष्मण के साथ निवास कर रहे थे । वहाँसे रावणने सीताहरण किया। इस दुखसे उन्हें व्याकुलता हुई । सीताजी की तलाश में वन-वन भटकते हुए उन्हे जटायु मिला जो मरणासन्न था । उसके पश्चात उन्होंने वनमें कबन्ध राक्षसका वध किया । सुग्रीवसे मित्रता करके श्रीरामचन्द्रजीने वानरसेना को संगठित किया । हनुमानजी श्रीरामचन्द्रजी की मुद्रा लेकर लंका गए और सीताजी की तलाश करके लौट आए । वहाँसे लौटते ही लंकाकथन के पश्चात सुग्रीवसे अनुमति लेकर श्रीरामचन्द्रजीने लंका जाना निश्चित किया । सागरतीर आनेपर वे लक्ष्मणसे कहने लगे, ''हे सुमित्रानंदन ! इस अगाध सागर में अनेक भयानक जीवजंतु है ।इसे सुगमतासे कैसे पार करे, कौनसाभी उपाय सूझ नही रहा है ।''

लक्ष्मणने कहा, ''महाराज ! आप ही आदिदेव और पुराण पुरूष पुरूषोत्तम है । आपसे कुछ भी छिपाना असंभव है । इस

द्वीप में प्राचीन काल से बकदाल्भ्य मुनि रहते है । पास में ही उनका आश्रम है । हे रघुनन्दन ! उन्हें इस समस्या का समाधान पूछते है ।''

लक्ष्मण के कथनानुसार प्रभु रामचंद्रजी मुनिवर्य बकदाल्भ्य के पास मिलने उनके आश्रम गए उन्हें सादर प्रणाम किया । तब मुनिवर्यने पहचाना कि यही परमपुरूषोत्तम श्रीराम है । अत्यंत आनंदपूर्वक उन्होंने पूछा, ''श्रीराम, आपका आगमन किस हेतु हुआ?''

रामचंद्रजीने कहा, ''हे मुनिवर्य ! रावणका संहार करने मै यहाँ आया हूँ । कृपा करके यह सागर पार करनेका उपाय बताएँ ।''

बकदाल्भ्यजीने कहा, ''हे श्रीराम ! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की 'विजया'एकादशी के पालन से विजय मिलता है । हे राजन ! इस व्रतकी विधि इस प्रकार है । दशमीदिन सोने, चांदी, पीतल, तांबा अथवा मिट्टी के एक कलश की स्थापना करे । उसमें पानी भरके पत्ते डाले । उसपर भगवान् नारायण के सुवर्णमय विग्रहकी स्थापना करे । एकादशी के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान करे । उसके बाद पुष्पमाला, चंदन, सुपारी, नारियल अर्पण करके उस कलशकी पूजा करनी चाहिए । दिनभर कलश के सामने बैठकर कथा करनी चाहिए, साथही जागरण भी करना चाहिए । घी का दीपक जलानेसे व्रतकी अखंड सिद्धी प्राप्त होती है । उसके पश्चात द्वादशी के दिन नदी या तालाब के किनारे उस कलशकी विधिवत पूजा करके वो कलश ब्राह्मण को दान करना चाहिए । महाराज ! कलश के साथ और भी बडे बडे दान करने चाहिए। हे श्रीराम ! आप इस व्रत का पालन कीजिए, इससे आपको विजय प्राप्त होगी ।''

ब्रह्माजी कहने लगे, ''हे नारद ! मुनिवर्य के कहेनुसार प्रभु श्रीरामचंद्रजीने 'विजया' एकादशी का व्रत किया । उस व्रत के प्रभाव से श्रीरामचंद्रजी विजयी हुए । हे पुत्र ! इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य को इस जीवनमें विजय प्राप्त होता है और अक्षय परलोक प्राप्त होता है !''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''इस एकादशी का पालन करना चाहिए! इसका महात्म्य सुननसे वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है ।''

८. आमलकी एकादशी

इस एकादशी का महात्म्य ब्रह्मांड पुराणमें कहा गया है ।

युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे श्रीकृष्ण ! फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम क्या है ? यह व्रत किस प्रकारसे करना चाहिए कृपया आप बताईये ।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे धर्मनन्दन ! प्राचीन कालमें मान्धाता राजाने वशिष्ठ ऋषिको इसके बारे में पूछा था । इसे 'आमलकी' एकादशी कहते है और जो कोईभी इस व्रतका पालन करता है उसे विष्णुलोक या वैकुंठ की प्राप्ति होती है ।''

राजा मान्धाताने पूछा, ''हे ऋषीवर्य ! पृथ्वीपर इस का कभी आरंभ हुआ इस विषय में आप मुझे बताईये ।''

वशिष्ठ ऋषि कहने लगे, ''हे महाभाग ! पृथ्वीपर इस 'आमलकी' के प्रारंभ की कथा सुनो । आमलकी महान वृक्ष है जो सब पापोंका नाश करता है । भगवान् विष्णुकी थूंक से एक चंद्रमसमान बिंदू प्रकट हुआ । वह बिंदू पृथ्वीपर गिरा उसमें से वृक्ष उत्पन्न हुआ जिसे आमलकी नाम मिला । सब वृक्षोमें यह आदिवृक्ष माना जाता है । उसी वक्त सारी सृष्टि के निर्माता ब्रह्माजीकी भी उत्पत्ति हुई । उन्हींसे सब प्रजाकी सृष्टि हुई जिसमे देवता, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, नाग तथा पवित्र और शुद्ध हृदय वाले महर्षियों का जन्म हुआ। उनमें से देवता और ऋषिलोक विष्णुप्रिया आमलकी वृक्ष के पास आए । हे महाभाग्यवान! उस वृक्षको देखते ही देवताओंको काफी आश्चर्य हुआ और एक दूसरे को देखकर वो विचार करने लगे, पलस आदि वृक्षोंको हम जानते है, पर इस वृक्ष को हम प्रथम बार देख रहे है । उन्हें इस स्थिती में देखकर आकाशवाणी हुई, ''हे महर्षि, यह आमलकी वृक्ष है, जो श्रीविष्णु को अति प्रिय है । केवल इसके स्मरणसे गोदानका पुण्य प्राप्त होता है। हमेशा आँवला खाना चाहिए । सब पापोंको नाश करनेवाला यह वैष्णव वृक्ष है ।''

तस्या मूले स्थितो विष्णुस्तदूर्ध्वंच पितामहः ।
स्कन्धे च भगवान रुद्रः संस्थितः परमेश्वरः ।।
शाखासु मुनयः सर्वे प्रशाखासुच देवताः ।।
पर्णेषु वसवो देवाः पुष्पेषु मरुतस्तथा ।।
प्रजानां पतयः सर्वे फलेष्वेव व्यवस्थिताः ।
सर्वदेवमयी ह्येषा धात्री च कथिता मया ।।

इस वृक्षके मूलमें विष्णु, अग्रभाण में ब्रह्माजी, स्कन्ध में शिवजी, शाखाओंमे मुनि, प्रशाखामें देवता, पत्तों में वसु, फुलों में मरूतगण तथा फलोंमें सब प्रजापती वास करते है। इसलिए आमलकी वृक्षको सर्वदेवमय कहा जाता है। इसलिए यह सब विष्णुभक्तोंको प्रिय है।

ऋषिने कहा, ''हे अव्यक्त महापुरूष, आप कौन है ? हम आपको क्या देवता समझे ? कृपया आप हमे बताईये ।''

फिरसे आकाशवाणी हुई, ''जो सभी जीवोंका कर्ता, सब भुवनोंका स्रोत है ओर विद्वान पुरूषोंको भी अगम्य मैं वही विष्णु हूँ ।'' देवादिदेव भगवान् विष्णुका कथन सुनने से सभी ब्रह्मपुत्र आश्चर्यचकित होकर बडे भक्तिभावसे श्रीविष्णुकी स्तुति करने लगे।

ऋषि ने कहा, ''सभी जीवोंके आत्मभूत आत्मा एवं परमात्मा आपको प्रणाम करते है । जिनका कभी पतन नही होता उन अच्युतको हम नमस्कार करते है । दामोदर, यज्ञेश्वर और परमपरमेश्वर आपको हमारा प्रणाम है । आप मायापति और संपूर्ण विश्वके स्वामी है आपको हमारा वंदन है ।''

इस प्रकार ऋषियोंने की हुई स्तुति सुनने से भगवान् विष्णु प्रसन्न हुए और कहने लगे, ''हे महर्षि ! मै आपको कौनसा अभिष्ट वरदान दूँ ।''

ऋषिने कहा, ''हे भगवान ! आप सचमुच हमारे ऊपर प्रसन्न है तो जिस व्रत को करने से मोक्ष मिलता है वो हमे कहें ।''

श्रीविष्णु ने कहा, ''हे महर्षियों ! फाल्गुन शुक्ल पक्ष में अगर पुष्य नक्षत्रयुक्त द्वादशी होगी तो वो सब पापों को नष्ट करनेवाली होगी । हे द्विजवर ! उस दिन विशेष कर्तव्य करना चाहिए उसके बारे में सुनिए । आमलकी एकादशी को रातभर आमलकी वृक्षके पास जाकर जागरण करना चाहिए । उससे मनुष्य को सभी पापोंसे मुक्ति साथ ही उसे सहस्र गाय दान करनेका पुण्य भी मिलता है । हे विप्रगण ! सभी व्रतोंमें ये उत्तम व्रत है ।''

ऋषियोंने पूछा, ''हे भगवान् ! कृपया इस व्रत की विधि बताये । इसे कैसे पूर्ण करे? इसके अधिष्ठाता कौन है ? इस दिन स्नान, दान आदि विधि किस प्रकार करनी चाहिए ? पूजा की विधि क्या है ? उसके लिए मंत्र क्या है ? कृपया यथार्थ रूप से इसका वर्णन करे ।''

भगवान् श्रीविष्णुने कहा, ''हे द्विजवर सुनिए ! एकादशी दिन प्रातःकाल जल्दी उठे । दंतधावन करनेके बाद संकल्प करना चाहिए कि, हे पुण्डरीकाक्ष ! हे अच्युत ! आज मै निराहार एकादशी करके कल भोजन ग्रहण करूँगा । कृपया मुझे अपने चरणोंमें आश्रय दीजिए ।'' इस प्रकार से नियम ग्रहण करने के बाद पापी, पतित, चोर, पाखंडी, दुराचारी, मर्यादा भंग करनेवाले, गुरू पत्नीगामी इन व्यक्तियोंसे वार्तालाप न करें। अपने मन को वश में रखकर नदी, तालाब, कुआँ या घर में स्नान करे । स्नान करनेसे पूर्व शरीरको मिट्टी लगानी चाहिए । मिट्टी लगाते समय इस मंत्र को कहना चाहिए ।

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
मृत्तिके हर मे पापं जन्मकोट्यां समर्जितम् ।।

हे वसुंधरा ! आप के उपर अश्व तथा रथोंका चलना हमेशा सहन करती है । भगवान वामन देवने भी अपने पैरोंसे आपको नापा है । हे मृत्तिके, मैने करोंडो जन्मोंमें अनेक पाप किए है कृपया उन सभी पापोंका आप हरण कीजिए ।

स्नान मंत्र

त्वं मातः सर्वभूतानां जीवनं तत्तु रक्षकम् ।
स्वेदजोद्भिज्जजातीनां रसनां पतये नमः ।।
स्नातो ऽ हं सर्वतीर्थेषु हृदयप्रस्रवणेषु च ।
नदीषु देवखातेषु इदं स्नांन तु मे भवेत् ।।

हे जल अधिष्ठात्री देवी ! हे माते ! तुम सभी जीवोंका जीवन हो । वही जीवन जो स्वेदज और उद्‌भिज जातिके जीवोंका रक्षक है । तुम रस स्वामिनी हो, तुम्हे हमारा वंदन है । आज मैने सब तीर्थोमें, कुंडमें, तालाबमें और देवतासंबंधी सरोवर में स्नान किया है । मेरा ये स्नान उपर कहे हुए सभी स्नानोंका फल देनेवाला हो ।

विद्वान पुरूषको परशुराम की सोनेकी प्रतिमा बनानी चाहिए । वो चाहे अपनी शक्ति के अनुसार एक अथवा आधे तोले की हो । स्नान के पश्चात घर में पूजा और हवन करे । उसके बाद पूजा की सभी सामग्री लेकर आमलकी वृक्ष के पास जाएँ । वृक्ष के पास की जगह की साफ-सफाई करके गोबर से लेपना चाहिए। इस प्रकार शुद्ध भूमिपर मंत्र पठनद्वारा नये कुंभ की स्थापना करे । उस कलशमें पंचरत्न तथा चंदन छोडकर श्वेत चंदनसे उसे सजाए । कंठमें फूलोंकी माला डालकर सुगंधित धूप अर्पण करना चाहिए । दीपक प्रज्वलित करे इसका उद्देश्य यही कि सभी प्रकारका मनोहर, सुशोभित दृश्य निर्माण हो । पूजा के लिए नया छाता, जूता तथा वस्त्र ले। कलशपर एक बर्तन रखकर उसमें दिव्य लाजों को भरे । उसके उपर सुवर्णमय परशुरामजीकी स्थापना करे। **विशोकाय नमः** कहकर उनके चरणोंकी, **विश्वरूपिणे नमः** कहकर उनके घुटनोंकी, **उग्राय नमः** कहकर

उनके जंघाकी, **दामोदराय नमः** कहकर उनके कटिभागकी, **पद्मनाभाय नमः** से उदरकी, **श्रीवत्सधारिणे नमः** से वक्षस्थलकी, **चक्रिणे नमः** से उनके बायें हाथकी, **गदिने नमः** से दाएँ हाथकी, **वैकुण्ठाय नमः** से कंठकी, **यज्ञमुखाय नमः** से मुखकी, **विशोकनिधये नमः** से नासिकाकी, **वासुदेवाय नमः** से आंखोंकी, **वामनाय नमः** से ललाटकी, **सर्वात्मने नमः** से मस्तक तथा सभी अंगोंकी पूजा करनी चाहिए ।

नमस्ते देवदेवेश जामदग्न्य नमोऽस्तु ते ।
गृहणार्घ्यमिमं दत्तमामलक्या युतं हरे ।।

हे देवदेवेश्वर ! हे जमदग्निनंदन ! आपको मेरा सादर वंदन है । आमलकी के साथ इस अर्ध्य का आप स्वीकार करे ।

उसके पश्चात भक्तिभावसे जागरण करे । नृत्य, संगीत, वाद्य, धार्मिक उपाख्यान तथा श्रीविष्णु के संबंध की कथा-वार्ता करते हुए वो रात गुजारनी चाहिए। भगवान विष्णुका नामस्मरण करते हुए आमलकी वृक्ष की १०८ अथवा २८ परिक्रमाएँ करे । प्रातःकाल होतेही श्रीहरि की आरती करनी चाहिए । श्री परशुराम के स्वरूप में विष्णु मेरे ऊपर प्रसन्न रहे इस भावना के साथ ब्राह्मणोंकी पूजा करके वहाँकी सभी सामग्री उन्हे दान देनी चाहिए ।

उसके पश्चात आमलकी वृक्ष की परिक्रमा करके स्नान करके ब्राह्मणोंको भोजन खिलाना चाहिए । उसके बाद परिवार के साथ स्वयं भोजन ग्रहण करे । ऐसा करनेसे जो पुण्य प्राप्त होता है उस विषय में सुनिए । सभी तीर्थोमें स्नान करनेसे, सभी प्रकारका दान करनेसे प्राप्त होता है वही पुण्य उपर्युक्त विधिका पालन करनेसे प्राप्त होता है । सभी यज्ञों को पूर्ण करनेसे जो पुण्य मिलता है उससे भी अधिक पुण्यप्राप्ती इस व्रत से होती है । इसमें किंचित भी संशय नही । वशिष्ठ ऋषि ने कहा, ''हे राजन ! इतना कहकर भगवान विष्णु अंर्तधान हो गये। तब सभी महर्षियोंने इस व्रतका पालन किया । उसी प्रकारसे आपको भी इस व्रतका अनुष्ठान करना चाहिए ।''

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन् ! यह दुर्धर्वव्रत सभी पापोंसे मनुष्य को मुक्त करता है ।''

ꙮ ꙮ ꙮ
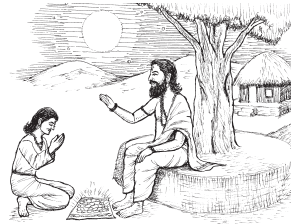
९. पापमोचनी एकादशी

भविष्योत्तर पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादोंमें पापमोचनी एकादशी का वर्णन आता है ।

एक बार युधिष्ठिर महाराज भगवान् श्रीकृष्ण को कहने लगे, ''हे केशव! आमलकी एकादशी के वर्णन के पश्चात चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली पापमोचनी एकादशी का कृपया कथन करें ।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन! बहुत वर्ष पहले लोमश ऋषिने राजा मान्धाता को इस पापमोचनी एकादशी की महिमा सुनायी थी। इस एकादशी व्रत के पालन से मनुष्य सब पापोंसे मुक्त होता है और जीवन के अनेक प्रकारके बुरे अनुभव से मुक्त होकर अष्टसिद्धी प्राप्त करता है ।''

लोमश ऋषीने कहा, ''बहुत पहले देवाताओंका कोषाध्यक्ष कुबेर का अतिशय सुंदर चैतरथ नाम एक मनोहर उपवन था। विशेष करके पूरे वर्षभर वसंत ऋतु के जैसा उस उपवन का वातावरण था। इसीलिए स्वर्गकन्या, किन्नर, अप्सरा और गंधर्व हमेशा विहार के लिए वहाँ आते थे। विशेष करके देवेंद्र और अन्य देवता भी वहाँ आकर आनंद और प्रेमका आदान-प्रदान करथे थे । उसी उपवनमें शिवजीके परमभक्त मेधावी नामक ऋषि तपस्या करते थे जिनकी तपस्या अनेक प्रकारसे भंग करने का प्रयत्न स्वर्गकी अप्सराएँ करती थी ।

मंजुघोषा अप्सराने उनका तपोभंग करनेका निश्चय किया । उसने ऋषि के आश्रम के समीप ही कुटिया बांधी और बहुत ही मधुर स्वरमें गाना गाने लगी । उसी समय शिवजीका शत्रु कामदेव भी शिवभक्त मेधावी ऋषि को जीतने का प्रयत्न करने लगे । शिवजीने कामदेव को एकबार भस्म किया था उसीका प्रतिशोध लेने के लिए कामदेवने ऋषिके शरीरमें प्रवेश किया । शुभ्र उपवीत धारण किए हुए मेधावी ऋषि च्यवन महर्षीके आश्रम में वास करते थे । कामदेव के शरीर में प्रवेश से मेधावी ऋषि भी कामदेव जैसे ही सुंदर दिखने लगे । उसी वक्त कामासक्त मंजुघोष उनके सामने आई । मेधावी ऋषि भी काम से घायल हो गए । उन्हे शिवजी की उपासना का विस्मरण हुआ और स्त्री संग मे पूरी तरह मग्न रहे । स्त्री-संग में उन्हे दिन-रात का भी विस्मरण हो गया। इस प्रकार अनेक वर्ष मेधावी ऋषीने काम क्रीडामें बिताए।

उसके पश्चात मंजुघोषने जाना कि मेधावी ऋषिका पतन हो चुका है और उसे अब स्वर्ग लौटना चाहिए । प्रणय में मग्न ऋषीको वह कहने लगी, ''हे ऋषीवर ! कृपया

मुझे स्वर्गलोक में लौटने की अनुमति दीजिए ।'' उसपर मेधावी ऋषीने उत्तर दिया, ''हे सुंदरी ! आज संध्या को तुम मेरे पास आयी हो, आज रात यहाँ पर रहकर सुबह तुम लौट जाना।'' मंजुघोषा इस तरह और कुछ वर्ष वहाँ रही जो ५७ वर्ष ९ महिने ३ दिन का काल था, परंतु ऋषि के लिए यह काल केवल अर्धरात्रि समान था । पुनः स्वर्ग जाने की अनुमति लेनेपर ऋषि ने कहा, ''हे सुंदरी ! अब प्रातः हो रही है, मेरी प्रातःविधी के पश्चात तुम जाना ।'' तभी अप्सरा हसते हुए कहने लगी, ''हे ऋषिवर ! प्रातःविधी को आपको कितना समय लगेगा ? अभी तक आपको तृप्ति नही आई ? मेरे संग में आपने कितने वर्ष गुजारे है? इसलिए कृपया समय का ध्यान करें ।''

ये शब्द सुनते ही मेधावी ऋषीने वर्षोंकी गणना की और कहा, ''अरेरे ! हे सुंदरी ! मैने अपने जीवनके ५७ वर्ष व्यर्थ गवा दिए । तुमने मेरे जीवन और तपस्या इन दोनोंका नाश किया।'' ऋषीके आँखोमें आंसू आए और उन्होंने मंजुघोष को शाप दिया, ''हे दुष्टे ! तुम्हे धिक्कार है ! तुमने मेरे साथ चुडैल जैसा व्यवहार किया है, इसलिए तुम चुडैल बनो।''

ऋषीसे शाप मिलने के बाद मंजुघोषा ने कहा, ''हे द्विजवर ! कृपया ये कठोर शाप आप वापस लीजीए । आप बहुत समय हमारे साथ रहे । हे स्वामी ! कृपया दया कीजिए ।'' इसपर मेधावी ऋषी कहने लगे, ''हे देवी ! मै अब क्या करुँ ? तुमने मेरी तपोशक्ति तथा तपोधन का नाश किया है । फिर भी इस शाप से मुक्त होने का उपाय सुनो । चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में जो पापमोचनी एकादशी आती है उस दिन इस एकादशी व्रतका कठोर पालन करनेसे इस पिशाच्च योनीसे तुम्हे मुक्ति मिलेगी।''

इतना कहकर मेधावी

ऋषी अपने पिता च्यवन ऋषिकें आश्रम लौट आए। अपने पतित पुत्रको देखकर च्यवन ऋषीकों बहुत दुःख हुआ। वे कहने लगे, ''हे पुत्र ! तुमने ये क्या किया? एक स्त्री के लिए अपनी तपस्या नष्ट की। अपना ही नाश कर लिया?'' उसपर मेधावी ऋषीने कहा, ''मैंने दुर्भाग्यसे एक अप्सरा का संग करके बहुत बडा पातक किया । कृपा करके इस पापका योग्य प्रायश्चित बताएँ ।'' पश्चातापदग्ध पुत्र के शब्द सुनने के बाद च्यवन महर्षी ने कहा, ''चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की पापमोचनी एकादशी के व्रत पालन से तुम पापामुक्त हो जाओगे।''

''उत्साह और कठोरतासे मेधावी ऋषीने उस व्रतका पालन किया जिसके प्रभावसे वे सभी पापोंसे मुक्त हुए । मंजुघोषको भी इस व्रत के पालन करने से अपने पूर्वरूप की प्राप्ति हो गई जिससे वह स्वर्गलोक चली गई ।''

यह कथा कहने के पश्चात लोमश ऋषीने मान्धाता राजाको कहा, ''हे प्रिय राजन ! केवल इस व्रत पालन से सभी पाप नष्ट हो जाते है। इस एकादशी के महात्म्य पढनेसे अथवा सुननेसे हजार गाय दान करनेका पुण्य प्राप्त होता है । इस एकादशी व्रत का पालन करने से अनेक पापोंसे जैसे कि भ्रुणहत्या, ब्रह्महत्या, मद्यपान, परस्त्रीसंग, गुरुपत्नीसंग इनका नाश हो जाता है ।''

ω ω ω

१०. कामदा एकादशी

वराह पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवाद में कामदा एकादशी का महात्म्य कहा गया है ।

महाराज युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को कहने लगे, ''हे यदुवर, कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करे। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का वर्णन करे। इस व्रतकी विधी और उसका पालन करने से होनेवाले लाभ का वर्णन करें।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''प्रिय युधिष्ठिर महाराज ! पुराणोंमे वर्णित एकादशी का महात्म्य सुनो। एक बार प्रभु रामचंद्र के पितामह महाराज दिलीपने अपने गुरू वसिष्ठ को यही प्रश्न पूछा था।''

वसिष्ठजीने कहा, ''हे राजन् ! निश्चित आपकी इच्छा पूर्ण करुँगा। इस एकादशी को 'कामदा' कहते है । इस व्रतके पालनसे सभी पाप जलकर भस्म हो जाते हैं और व्रत के पालन करने वाले को पुत्रप्राप्ति होती है।''

बहुत वर्ष पहले रत्नपुर (भोगीपुर) राज्य में पुण्डरीक राजा अपनी प्रजा गंधर्व, किन्नर के साथ रहते थे। उसी राज्यमें अप्सरा ललिता अपने गंधर्व पति ललित के साथ रहती थी। उनका एक दूसरे पर बहुत प्रेम था। प्रेम इतना प्रगाढ था कि, एक क्षण भी एक दूसरे के बगैर वे नहीं रहते।

एक बार पुण्डरीक राजा की सभा में सब गंधर्व नृत्य और गायन करे रहे थे। उसमें ललित गंधर्व भी था। पत्नि सभा में न होने के कारण उसका नृत्य और गायन ताल में नही था। वहा प्रेक्षकोंमें कर्कोटक नामका सर्प भी था । उसने ललित के विसंगत नृत्य और गायन का रहस्य जाना और राजा को उसी प्रकार बताया । राजा बहुत क्रोधित हुए उन्होंने ललित को शाप दिया, ''हे पापात्मा ! अपने स्त्रीपति कामासक्ती के कारण तुमने

नृत्यसभामें विसंगती निर्माण की है। इसलिए मै तुम्हे नरभक्षक बनने का शाप देता हूँ !''

पुण्डरीकसे शाप मिलते ही ललित को भयंकर नरभक्षक राक्षसका रूप मिला। अपने पतिका भयानक रूप देखकर ललिताको बहुत दुःख हुआ। फिर भी सभी मर्यादायें छोडकर वह अपने पति के साथ वनमें रहने लगी।

वनमें भ्रमण करते हुए विंध्य पर्वत के शिखरपर पवित्र शृंगी ऋषीका आश्रम ललिताने देखा और तुरंत आश्रममें जाकर ऋषीके सामने उसने प्रणाम किया ।

उसे देखकर श्रृंगी ऋषीने पूछा, ''तुम कौन हो ? तुम्हारे पिता कौन है? तुम यहाँ किस कारण से आयी हो ?''ललिताने कहा, ''हे ऋषीवर ! मैं ललिता, वृंदावन गंधर्व की कन्या हूँ । अपने शापित पति के साथ मैं यहाँ आयी हूँ । गंधर्व राजा पुण्डरीक के शापसे मेरे पति राक्षस बने है। उनका यह रूप देखकर मुझे बहुत दुख हो रहा है । कृपया इस शापसे मुक्ति मिलने का उपाय कथन करें जिस प्रायश्चितसे मेरे पति की राक्षसी योनी से मुक्तता हो।'' ललिताकी नम्र विनंती सुनकर शृंगी ऋषीने कहा, ''हे गंधर्वकन्या ! कुछ ही दिनों में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की कामदा एकादशी आएगी। इस व्रतका तुम कठोर पालन करो और तुम्हे मिलनेवाला सभी पुण्य अपने पतीको अर्पण करो। जिससे वह इस शापसे मुक्त हो जाएंगे। ये एकादशी सभी इच्छा पूर्ण करनेवाली है।''

''हे राजन ! ऋषी के कहेनुसार ललिताने आनंदपूर्वक और कठोरतासे इस व्रतका पालन किया। द्वादशी के दिन भगवान् वासुदेव और ब्राह्मणों के समक्ष उसने कहा, ''मैंने अपने पतिकी शापसे मुक्तता कराने के लिए इसका पालन किया है। इस व्रत के प्रभावसे मेरे पति शापमुक्त हो जाएँ।''और क्या आश्चर्य नरभक्षक ललित पुनः गंधर्व बना। उसके बाद ललिता और ललित सुखसे रहने लगे।

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे युधिष्ठिर महाराज ! हे राजेश्वर ! जो कोई भी इस अद्‌भुत कथा का श्रवण करेगा और अपनी क्षमता के साथ इसका पालन करेगा वह ब्रह्महत्या के पातक से और आसुरी शापसे मुक्त हो जाएगा।''

११. वरुथिनी एकादशी

वैशाख मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली वरुथिनी एकादशी का महात्म्य भविष्योत्तर पुराणमें श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादमें कहा गया है।

एक बार युधिष्ठिर महाराजने भगवान् श्रीकृष्ण से पूछा, ''हे वासुदेव ! वैशाख मास के कृष्ण पक्षकी एकादशी का नाम क्या है ? और इस एकादशी व्रतका पालन करनेसे क्या फल प्राप्त होता है और उसका महात्म्य क्या है ?''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे प्रिय राजन् ! इस एकादशी का नाम वरुथिनी है जिसको करनेसे इस जन्म और अगले जन्म में भी सौभाग्य प्राप्त होता है। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से व्यक्ति सभी पापोंसे मुक्त होता है, साथ ही उसे वास्तविक आनंद की प्राप्ति होकर वह भाग्यवान बनता है। और जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा मिलकर उसे भगवान की भक्ति प्राप्त होती है। इस व्रत के पालन से मान्धाता राजाको मुक्ति मिली। उसी प्रकार अनेक राजा महाराजा जैसे की महाराज धुन्धुमार भी मुक्त हुए। केवल वरुथिनी एकादशी के व्रत से दस हजार वर्ष तपस्या का फल प्राप्त होता है। तथा सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्रपर ४० किलो सुवर्णदान का फल इस व्रत को करनेसे मिलता है।''

''हे राजन् ! गजदान ये अश्वदान से श्रेष्ठ है, भूमिदान ये गजदान से श्रेष्ठ माना जाता है और तिलदान ये भूमिदान से भी श्रेष्ठ है। सुवर्णदान ये तिलदान से श्रेष्ठ है तथा अन्नदान ये सुवर्णदान से भी श्रेष्ठ है। हे राजन्! अन्नदान करने से पूर्वज, देवता और सभी प्राणी प्रसन्न होते है। बुद्धिमान लोंगो का यह विचार है कि, कन्यादान भी अन्नदान इतना ही पुण्यकार्य है। स्वयं भगवान् कहते है कि अन्नदान ये गोदान इतना ही श्रेष्ठ है। परंतु सर्वश्रेष्ठ विद्यादान ही है।''

केवल वरुथिनी एकादशी व्रत के पालन से सभी प्रकारके दान देने जैसा पुण्य प्राप्त होता है। अपने चरितार्थ के लिए जो अपनी कन्या को बेचता है वो सबसे नीच मनुष्य माना जाता है और प्रलयतक उस व्यक्तिको नरक में दुःख भोगना पडता है। इसलिए किसी को भी अपनी कन्या के बदले में कभी धन स्वीकार नही करना चाहिए। और जो व्यक्ति ऐसा करता है उसे अगला जन्म बिल्ली का मिलता है। परंतु अपनी क्षमता से जो व्यक्ती सुवर्णालंकार से सुशोभित करके योग्य वर को अपनी कन्या प्रदान करता है उस व्यक्ति के पुण्यों का लेखाजोखा यमराज के सचिव चित्रगुप्त भी नही कर सकते।

इस एकादशी के व्रत का पालन करनेवालों को कुछ बाते वर्जित है वह है :- कांसे के बर्तन में न खाऐं। मांसाहार न करें। मसूर की दाल, हरी सब्जियाँ, मटर ना खाऐं। अभक्त के हाथ का बनाया हुआ न खाऐं। दशमी, एकादशी दिन मैथुन वर्जित है। जुआ ना खेलें। पान न खाऐं। दांत की सफाई न करे। (दंतमजन करना वर्जित है) प्रजल्प न करे। झूठ ना बोलें। किसीकी भी निंदा न करे। पापी व्यक्तिसे बात न करे। दिनमें न सोये। किसीपर भी क्रोध ना करे। शहद न खायें। दशमी,एकादशी और द्वादशी के दिन नाखून, बाल ना काटें। दाढी भी न करे। दशमी, एकादशी और द्वादशी के दिन शरीरको तेल न लगाऐं। सावधानीपूर्वक इन सब बातोंका पालन करनेसे उत्तम प्रकार से एकादशी व्रत का पालन होता है और पालन करनेवाले को जीवन के सर्वोच्च ध्येय की प्राप्ति होती है। एकादशी के दिन जागरण करने से सभी पाप क्षय हो जाते है और उसे भगवद्धाम की प्राप्ति होती है। इस एकादशी की महिमा को जो कोई भी सुनता है अथवा पढता है उसे एक सहस्र गोदान का पुण्य मिलता है और वह भगवान् विष्णुके धामकी प्राप्ति करता है।''

१२. मोहिनी एकादशी

सूर्य पुराणमें वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली मोहिनी एकादशी की महिमा का वर्णन है।

महाराज युधिष्ठिरने भगवान् श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे जनार्दन! वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है ? इस व्रतका पालन कैसे करे ? इसे करने से क्या पुण्य प्राप्त होता है, कृपया आप विस्तारसे कहिए।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे धर्मपुत्र! ध्यान से सुनिए! जो कथा वशिष्ठ मुनिने प्रभू रामचंद्रको सुनायी थी वह मै आपको कहता हूँ।''

पूर्व कालमें प्रभु रामचंद्र वशिष्ठ महाराज को पूछने लगे, ''हे आदरणीय ऋषिवर ! सीताजी के विरह से मैं अत्यंत निराश हूँ। कृपया आप हमें ऐसा व्रत बताईये जिसके प्रभाव से सब पापोंसे और दुःखोसे मुक्ति मिले।''

प्रभु रामचंद्रजीके आध्यात्मिक गुरु वशिष्ठजी ने कहा, ''प्रिय राम! आप बहुत बुद्धिमान है! आपके पवित्र नाम से ही सभी प्राणियोंके दुःख दूर होते है, उनका जीवन मंगलमय होता है। फिर भी सभी जीवोंके उद्धार के लिए पूछा गया यह प्रश्न प्रशंसनीय है। अब मैं आपको इस व्रतकी विस्तारपूर्वक कथा कहता हूँ। वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में मोहिनी एकादशी आती है। वो बहुत ही मंगलकारक है, इस व्रत के पालन से व्यक्ति संसारके दुःखोसे, अनेक पापोंसे तथा भौतिक भ्रमसे मुक्त होता है।''

''प्राचीन काल में सरस्वती नदी के किनारे रम्य भद्रावती नामक राज्य था। धृतिमान नामक राजा वहाँ राज्य करता था। चंद्रवंशमें जन्मा यह राजा सहिष्णु और सत्यवादी था। उसी शहरमें धनपाल नामक एक वैश्य था जो बहुत ही पुण्यवान वैष्णव था। जनहित हेतू उस भक्त धनपाल ने नगर

में अनेक धर्मशाला, रुग्णालय, बडे मार्ग, पाठशाला, बाजार और भगवान् विष्णुके मंदिर की स्थापना की थी । पीने के पानी के कुएँ, शुद्ध जल का तालाब तथा अन्नछत्र पूरे नगर में बनाए थे । इस प्रकार जनकल्याण के लिए अपने धन का उपयोग योग्य तरीके से करते हुए अपना नाम धनपाल सचमुच सार्थक किया। सबका हित चिंतनेवाला, सब के उपर प्रेम रखनेवाले इस वैष्णव के पाँच पुत्र थे। समन, द्युतिमन, मेधवी, सुकीर्ति और धृष्टबुद्धि ये उनके नाम थे। इन सभी में धृष्टबुद्धी बहुत पापी और दुराचारी था। दुष्ट व्यक्तियोंका संग, व्यभिचारी स्त्रियोंका संग, निष्पाप पशु की हत्या, मांस, मदिरापान करना इन सब पाप कृत्योंसे वह अत्यंत पापी और दुराचारी बना था। अपने परिवारके लिए वो कलंक था। देवता, ब्राह्मण, बुजुर्ग तथा अतिथियोंको कभी आदर नही देता, सदा पाप करने में रत था।

एक दिन मार्गपर वेश्या के कंधेपर हाथ रखकर जाते हुए उसे उसके पिता धनपालने देखा और उन्हे बहुत दुःख हुआ। उसी दिन उन्होने धृष्टबुद्धीको घरसे बाहर निकाला। इसलिए धृष्टबुद्धी अपने माता-पिता, भाई, रिश्तेदार और वैश्य समाज से अलग हुआ और हर एक के तिरस्कार का विषय बना। पिताके निकालने से धृष्टबुद्धी घर से बाहर जाकर ज्यादा पापकृत्योंमें व्यस्त हुआ। खुदके वस्त्र और धन बेचकर जो भी मिला वो सभी उसने पापकृत्योंमें लगाया। अंत में जब धन खत्म हुआ तो निर्धनता के कारण उसकी हालत भिखारी जैसी हुई। अन्न न मिलने से उसका शरीर कमजोर हो गया, उसके सभी धूर्त मित्रोंने बहाने बनाकर उसका त्याग किया।

धृष्टबुद्धी को अतिशय चिंता हो रही थी, भुख से वह व्याकुल हो रहा था। अब मुझे क्या करना चाहिए। अन्न और धन कहाँ से प्राप्त होगा ? इन प्रश्नोंको सोचकर वह अशांत हो रहा था। आखिर उसने चोरी करने का निश्चय किया और शुरुआत भी की। बहुत बार राजा के सिपाही उसे पकडने के बाद भी, उसके पिता का मान और बढप्पन देखकर छोड देते। फिर भी उसने चोरी करना बंद नही किया। एक बार विशेष चोरी करते समय वह पकडा गया। तब राजाने उसे कहा, ''हे मूर्ख, आज तुम इस राज्यमें नही रह सकते क्योंकि तुम महापापी हो। मैं तुम्हे अभी छोड रहा हूँ, तुरंत इस राज्य के बाहर चले जाओ। तुम्हे जहाँ जाना है तुम जा सकते हो।''

फिर से सजा मिलने के भय से धृष्टबुद्धी राज्य के बाहर गहन वन में गया। अविवेक के कारण निष्पाप प्राणियोंकी हत्त्या करके उनका कच्चा मांस वह खाने लगा। किसी शिकारी की भाँति हाथ में धनुष्य लेकर वह वन में पापकृत्य करते भटकने लगा।

धृष्टबुद्धी हर समय दुःखी और चिंतित रहता। परंतु एक दिन उसके पिछले

जन्म के पुण्यकर्म के प्रभावसे, वह एक ऋषिके आश्रम में पहुँचा । उस आश्रममें कौण्डिण्य नामक बडे तपस्वी रहते थे । वैशाख मास था और कौण्डिण्य मुनी गंगास्नान से लौट रहे थे। दुःखोंसे परेशान धृष्टबुद्धी ने अनजाने में ऋषिके वस्त्रसे टपकते जल को स्पर्श किया और आश्चर्यम्! वह अपने सभी पापोंसे मुक्त हो गया। उसी समय उसने ऋषिको दंडवत प्रणाम करके विनम्रता से पूछा, ''हे ऋषिवर ! मै बहुत पापी व्यक्ति हूँ । ऐसा कौनसा भी पाप नही है जो मैने नही किया हो। कृपया ऐसा व्रत बताईये जिसके प्रभावसे मैं सभी पापोंसे मुक्त हो जाऊँ। अपर्याद पापकृत्यों के कारण मैं अपने कुटुंब से, मित्रोंसे, समाज से दूर हो गया हूँ साथ ही मैं मानसिक दुःख के खाई में गिरा हूँ ।''

यह सब सुनते ही परदुखदुखी होनेवाले कौण्डिण्य ऋषिने कहा, ''सुनो! मेरु पर्वतसे भी अधिक प्रचंड पापों की राशि को नष्ट करनेवाले व्रत के बारे में मै तुम्हे कहता हूँ । उस व्रत के पालनसे कुछ ही क्षणोंमे तुम्हारे पापों का नाश हो जाएगा । वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी का पालन करते ही तुम सभी पापोंसे मुक्त हो जाओगे ।''

ऋषि के आदेश से धृष्टबुद्धीने इस व्रतका कठोर पालन किया। हे राजन! इस व्रत के पालन से वह सभी पापोंसे मुक्त होकर दिव्य शरीर प्राप्त करके गरुडपर सवार होकर विष्णुलोक चला गया। हे रामचंद्र ! इस व्रत से सभी पापोंसे, भ्रमसे व्यक्ति मुक्त होता है। इस व्रत से प्राप्त होनेवाला फल तीर्थमें स्नान करनेसे अथवा यज्ञ करनेसे प्राप्त होनेवाले से भी श्रेष्ठ है ।